दैनिक भास्कर 21 March, 2021 Lucknow - 21 Mar 2021 - Page 6

ऑनलाइन मंचों की हैरतअंगेज दुनिया

गीतांजलि सक्सेना

डिजिटल प्लेटफॉर्म मंच हमें दुनियाभर के लोगों के साथ जोड़ने और तमाम सुविधाएं सफलतापूर्वक मुहैया कराने में कामयाब रहे हैं। गत वर्षों में इनके तेजी से प्रचलन और उपयोगिता के कारण इस उपकरण ने एक नई तरह की अर्थव्यवस्था को जन्म दिया है। कोविड के चलते भी इन प्लेटफॉर्मों का बाजार हमेशा गर्म रहा। आज भी तो हम सब अपनी खरीदारी चाहे दवाइयां, खान-पान व रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने में काफी हद तक इन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर निर्भर रहते हैं। कोविड ने हमको बहुत कुछ सिखाया। सीखने-सिखाने का सिलसिला अभी भी जारी है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि यह काफी हद तक मददगार भी सिद्ध हुए। जब सारी दुनिया में लॉकडाउन के दौरान कामकाज ठप पड़े थे, उस समय भी इनके माध्यम से रोजगार और रोजगारों के क्षेत्र में तेजी से छलांग लगाने के अवसर बनते रहे।

आज तो हर क्षेत्र में इनकी पकड़ मजबूत होती जा रही है। काम करने के तरीकों में इस कदर परिवर्तन आया है कि अर्थव्यवस्था के विकास के विकल्पों का मार्केट व मार्केटिंग का स्वरूप ही बदल डाला। इन प्लेटफॉर्मों का स्पष्ट लाभ यह है कि अधिक सुविधाजनक तरीके से काम खोजने, नए कौशल सीखने और देश-विदेश के लोगों के साथ जुड़ने की अनुमति देते हैं जो अन्यथा नहीं मिलती है। किन्तु यह भी सच है कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के खुलेपन की नीति के कारण कई राजनीतिक और विनियामक मुद्दों का प्रवेश होना भी स्वाभाविक हो जाता है। इसीलिए यह जरूरी है कि इसके दूरगामी लाभ बनाए रखने के लिए और निरन्तर विकास के लिए नियमों में पारदर्शिता बनाए रखना बेहद आवश्यक हो गया है। हर उपभोक्ता के लिए जो इस मंच का उपयोग करते हैं, उनके विश्वास को बरकरार रखने के लिए उनके अधिकार को सुनिश्चित करने की अहमियत पर जोर दिया जाए और हर जगह के स्थानीय कानूनों और मानकों का अनुपालन करने के क्षेत्र में शीघ्रता से प्रयास करने होंगे। यह आज सब देशों के लिए चिन्ता का सबब बना हुआ है।

इंटरनेट की अभूतपूर्व क्रान्ति ने तो डिजिटल दुनिया के विकास और विस्तार को इतना व्यापक कर दिया है कि इनकी सीमाओं को बांधा जाना एक प्रश्नचिह्न बन गया है। इंटरनेट के सौजन्य से ही हम सोशल मीडिया सोसाइटी की सदस्यता प्राप्त कर पाये। यही नहीं दुनियाभर में फैले इन सदस्यों के साथ भावपूर्ण बातचीत, कुछ आवश्यक आदान-प्रदान कर सके, चाहे वह मनोरंजक व हास्य लिपि हो या दस्तावेज। इस क्षेत्र में लगातार हो रहे हैरतअंगेज विकास ने हमारी जीवनशैली में इतनी गहरी पकड़ हासिल कर ली है कि इस पर विराम लगाना तो असंभव ही नहीं तर्कहीन भी है।

किन्तु यह नहीं भूलना है कि किसी भी क्षेत्र को अनियंत्रित और अनियमित छोड़ना किसी भी देश की सामाजिक व्यवस्था के लिए घातक साबित हो सकता है। इसे आसानी से अनदेखा करना व्यवस्थित व्यवस्थाओं पर प्रहार करने के समान होगा।

मनुष्यों की प्रवृत्ति होती है कि जब तक उसे किसी प्रकार के नियम या बंधन के तहत न बांधा जाए तब तक वह

प्रचलन / उपयोगिता

हमारा 'सांस्कृतिक भण्डार' विषयों से भरा हुआ है। दर्शकों की परिपक्वता को हल्के में ना तौलें। हानिकारक विषयों से परहेज करते हुएअपने सकारात्मक योगदान के साथ सभ्य व स्वस्थ समाज की तस्वीरें पेश करना ही हम सब की जिम्मेदारी है।

अपनी जिम्मेदारियों को अपनी आजादी का नाम देकर स्थिति का दुरुपयोग करने में कामयाब हो जाते हैं। फिर जब देश की कानून और सामाजिक व्यवस्था को बिगाड़ने या तोड़ने का प्रयास करने वाले लोगों और संस्थाओं का मामला हो तब उन पर अंकुश लगाना ही हम सब के हित में होता है। यह एक व्यापक सामाजिक मुद्दा ही नहीं बल्कि बड़ी चुनौती का रूप धारण कर चुका है।

देश की संस्कृति से खिलवाड़ हमें लोकतांत्रिक मूल्यों से दूर करता है। एक स्वस्थ और समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में हर नागरिक का सकारात्मक योगदान ही सभ्य समाज की संरचना और उसके विकास में मदद करता है। आज की तारीख में टेलीविजन चैनलों के सीरियलों की ओर दर्शकों की रुचि कम होती नजर आ रही है। इसका एकमात्र कारण मनोरंजन की दुनिया में डिजिटल प्लेटफॉर्मों का बोलबाला कहा जा सकता है। कोविड के दौरान इनका बाजार बेहद गर्म रहा.. बेशक! उस दौरान हमारा चोली दामन के साथ का कारण बना। घर की चारदीवारी में बंद (लॉकडाउन में) लोगों का एक सच्चा साथी बना रहा। अब तो बस इनको देखना आदतों का हिस्सा बन गया है।

भारत में ओवर-द-टॉप मीडिया सर्विस के लगभग 40 प्रदाता हैं। जो इंटरनेट कनेक्टिविटी के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को टीवी चैनलों, फिल्मों, शो, वेब सीरीज आदि को मनोरंजन प्रदान करता है। यही नहीं यह कई भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध है।

ओटीटी प्लेटफॉर्म ने दर्शकों को अपनी पसंद-नापसंद के मुताबिक चैनल चुनने का अवसर दिया। इससे इनका तेजी से प्रचलन हुआ है। दुनिया भर में आज अनगिनत प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं। किसी एक ओर इशारा नहीं करते हुए अपनी जेब और इच्छानुसार इन्हें सब्सक्राइब करना सम्भव है। इनकी बढ़ती लोकप्रियता ने आर्थिक मंच के दरवाजे पर दस्तक दी है। बहुत सारे छोटे-बड़े कलाकारों को गुमनामी से निकलने में मदद मिली है। यही नहीं बालीवुड के अनेकों सितारों को भी इस मंच पर शामिल होकर अपनी जगह बनाते देखा जा रहा है। गत वर्ष से मनोरंजन का यह चर्चित माध्यम बन चुका है। उसके साथ ही प्रदाताओं की स्वतंत्रता और सीमाओं को निर्धारित करने के लिए बहस भी छिड़ चुकी है।

बहुत सारे लोगों का मानना है कि इन प्लेटफॉर्मों पर वेब सीरीज और फिल्मों के कंटेट में अनावश्यक विषय हिंसा, मारकाट और अन्य हानिकारक सामग्री का प्रदर्शन खुले-आम दिखाना सामाजिक मूल्यों व भारतीय परम्पराओं पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। इन वेबसाइटों पर महिलाओं की छवि का जो स्वरूप हम देख रहे हैं, वह देश संस्कृति की खूबसूरती को तोड़ता है। उनके उत्पीड़न की प्रदर्शनी महिलाओं के मनोबल को कमजोर करती है। इस ओर अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

पाश्चात्य संस्कृति का प्रचार व प्रसार और गंदगी को तश्तरी में परोस कर दिखाया जाना भारतीय संस्कृति का हिस्सा नहीं है और न ही हमारी सामाजिक व्यवस्था से मेल खाता है। यही वजह है कि इन वेब सीरीज और फिल्मों को कसौटियों के कटघरे में खड़ा होना पड़ रहा है। हम कहां जा रहे हैं? मनोरंजन के गिरते स्तर से क्या हासिल होगा, चिन्तन का विषय है। गौरतलब है कि हमारा 'सांस्कृतिक भण्डार' विषयों से भरा हुआ है। दर्शकों की परिपक्वता को हल्के में ना तौलें। हानिकारक विषयों से परहेज करते हुए अपने सकारात्मक योगदान के साथ सभ्य व स्वस्थ समाज की तस्वीरें पेश करना ही हम सब की जिम्मेदारी है।आज इन प्लेटफॉर्मों को नियामक प्राथमिकता में बांधना जरूरी होता नजर आ रहा है। अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में बढ़ते इन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को अधिक निश्चित दृष्टिकोण के लिए 'रेगुलेशन' का प्रस्ताव रखा जाना चाहिये। जिसमें प्रौद्योगिकी समुदाय को भी शामिल करना चाहिये ताकि मजबूत 'सुरक्षा पद्धतियां' समाधान का हिस्सा बनें। अन्यथा अनियंत्रित संचालन से चिन्ताओं की संख्या में एक और संख्या व नया अध्याय शामिल हो जाएगा। इसलिए सभी पक्षों के हित में दिशा-निर्देश की ओर पहल करना जरूरी है।

(वरिष्ठ स्तंभकार)